EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045
Volume 2, Issue 1, January-June, 2013, Available online at: www.eduzonejournal.com

संगीत का मानव जीवन पर सौन्दर्यात्मक प्रभाव

डॉ0 सुदेश कुमारी

सहायक प्रोफेसर, संगीत विभागए गोकुल दास हिन्दू गर्ल्स कालेज, मुरादाबाद
(एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली)

मानव सृष्टि की अन्यतम रचना है, जो बुद्धि कौशल के बल पर सृष्टि के अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ स्थान रखता है। उसके नेत्रों के मिलन के साथ ही कंठ से ध्वनि निःसृत हुई, साथ ही रूदंन गान और शरीर की अन्य भंगिमाओं ने उसकी भावभिव्यक्ति की। ध्वनि और स्थूल अंग संचालन की इस अविकसित प्रवत्ति में ही संगीत की व्यापक परिभाषा अन्तनिहित है।

संगीत की परिभाषा

ईश्वर भक्ति के या उपासना के जो भिन्न–भिन्न मार्ग वेदों में बताये गये, उन सबमें संगीत सुगम, सरल एवं महत्वपूर्ण मार्ग है। पहले संगीत शब्द का प्रचार में नहीं था, अतः साधारण भाषा में जन सामान्य में गाने बजाने को ही संगीत कहा गया है। साधारण अर्थ संगीत का यह है कि जहाँ भी गाया बजाया गया संगीत है। प्राचीन वाङःमय में संगीत का व्युपन्तिगत अर्थ सम्यक गौतम रहा है।

कतिपय शब्दकोशों में भी संगीत के अर्थ को गाना बजाना तथा व्यवहार में संगीत से लिया है। अन्य रूपों में भली भाँति गान योग्य गीत ही संगीत है। संगीत के लिए ठीक ही कहा गया है कि जब अभिव्यक्ति में शब्द असमर्थ हो जाता है तो वहाँ संगीत का सहारा लिया जाता है। तीन शब्दों से मिलकर बने संगीत में सम्पूर्ण स्वरात्मक, वाद्यात्मक तथा नृत्यात्मक अभिव्यक्ति व संवेदनायें सम्मिलित हैं। जैसे स्वरवद्ध व तालवद्ध वह सुन्दर गीत जिसे गाया बजाया जाता है, संगीत की श्रेणी में आता है।

अंततः जो गीत मन को आनन्द प्रदान करें वही संगीत के अन्तर्गत आता है। यही सुन्दर कर्णप्रिय संगीत जहाँ आत्मभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है वही दूसरों को मंत्रमुग्ध करने भी उसमे अदम्य शक्ति विद्यमान है।

मानव जीवन में अर्न्तनिहित संगीत

जिस प्रकार मानव ने अपनी भौतिक आवश्यकता की पूर्ति (आग पहिए, यातायात के साधन इत्यादि) की उसी प्रकार उसने अपनी मानसिक तुष्टि के लिए लालित्यपूर्ण सौंदर्यात्मक, सुमधुर संगीत को भी आत्मसात कर लिया। संगीत ने मानव को आत्मिक संतुष्टि के साथ परम आनन्द की भी अनुभूति कराई जो अन्य साधनों, प्रयत्नों से उसे प्राप्त नहीं हो सकती थी। साथ ही संगीत के द्वारा उसे जो अत्याधिक आनान्दित सुखानूभूति प्राप्त हुई, वह अन्य किसी भी विषयगत वस्तु से उसे नहीं मिल पाई। इसलिए उसने संगीत को आत्मिक रूप से जीवन में सर्वोच्च स्थान दिया, क्योंकि संगीत ने ही उसे अत्याधिक शान्ति प्रदान की। भौतिक वादी परिवेश ने जहाँ उसके जीवन में तीव्र गति से उथल पुथल मचायी। वही उसने संगीत में ठहराव को अनुभूत किया, जो उसके मन की शान्ति के लिए अनिवार्य था।

मानव ने जन्म लेते ही अपने आसपास के प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं को देखकर ही, सर्वप्रथम उसने संगीत को अनुभव किया होगा। जिस प्रकृति ने मानवीय संरचना को विकसित किया उसी प्रकृति माँ की गोद में उसके आयामों, स्थितियों, सुमधुर वातावरण, अनुशासित वस्तुओं को देखकर ही संगीत सृजित करने का भाव उसके अर्न्तमुखी मन से निःसन्देह उपजा होगा। ऐसी कल्पना निराधार नहीं हो सकती। उसके दैनिक जीवन में सांसारिक समाज में विचरण करते पक्षियों का, कव ध्वनि, झरनों का झंकृत प्रवाह, बादलों का गर्जन, नदियों का अविरल, कलकल, वर्षा की टिप–टिप भंवरों की गुंजार, वायु की सनसनाहट इत्यादि में पर्याप्त संगीत का प्रभाव अनुभूत किया होगा मानव के जीवन का सार होता है अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अन्त में मोक्ष

की प्राप्ति यही मोक्ष की कामना को पूर्ण करने के लिए प्राचीन काल में ऋषि मुनि तप–जप का मार्ग बताते थे। लेकिन शरीर के जीर्ण शीर्ण होने के बाद भी मनुष्य के लिए मोक्ष का मार्ग अत्यन्त दुर्लभ व कठिन होता था। वही वह संगीत के गेय रूप भजन कीर्तन करके ईश्वर के काफी निकट पहुँच जाता है। इसीलिए धार्मिक संगीत की महत्ता को सभी ने स्वीकार किया है क्योंकि भगवत भजन से धर्म, राजाओं, प्रभुओं से मिले सम्मान के रूप में अर्थ, अर्थ से काम तथा अन्ततः मोक्ष प्राप्ति का यही एक मात्र साधन है। आध्यात्मिक संगीत के द्वारा धर्म सुव्यवस्थित रूप से उभर कर आया है। जिसका प्रभाव शुचिता, पवित्रता के रूप में सर्वत्र परिलक्षित हुआ है। जन जीवन में पारस्परिक सौहार्द का अधिक्य भी इसी के परिणामस्वरूप आया। जिसका प्रभाव मानवीय समाज में सर्वत्र दिखाई देता है। संगीत मण्डलियों संगीत सम्मेलनों, संगीत सभाओं सार्वजनिक स्थलों पर मुखरित होता है इस प्रकार संगीत में पारम्परिक जीवन की जटिलताओं को दूर करके उनमें सरसता और मधुरता प्रदान की। मानवीय स्वास्थ्य की दृष्टि से भी आध्यात्मिक तथा धार्मिक विचार मानव के चरित्र सामाजिक, आर्थिक, मानसिक, सभी परिस्थितियों के लिए लाभप्रद होते हैं इसलिए संगीत समाज की ना केवल आवश्यकता बन गई वरन् मन मस्तिष्त को तृप्त करने वाली संजीवनी भी है।

संगीत का सौन्दर्यात्मक पक्ष

जब कोई वस्तु हमें केवल आनन्द देती है या जब किसी वस्तु में रुचि लेने लगते हैं, तो हमारा समस्त मस्तिष्क सुन्दरता से या सौन्दर्य से भर जाता है और हम उसके भाव में असीमति डूब जाते हैं। प्रसन्नता के अनुभव से हम सौन्दर्य का आनन्द लेते है। इस सौन्दर्य के अनुभव से एक प्रकार की असोम शांति प्राप्त होती है। अतः हम साधारणता आनन्द या भावनात्मक आनन्द को सौन्दर्यानुभूति कह सकते हैं और इसे ही किसी कला चाहे, चित्रकला, वस्तुकला या फिर संगीत कला का कलात्मक सौंदर्य कहा जाता है।

सहारा छोड़कर केवल ध्वनि संयोजन के आधार पर रचना की जाती है। जहाँ अन्य कलायें किसी न किसी माध्यम पर आश्रित होती है, वही संगीत अपने आप में एक पूर्ण कला मानी जाती है, उसकी सहयोगी कला काव्यकला मानी जाती है। इसीलिए दोनों कलाओं (संगीत काव्यकला) को प्रमुख श्रव्य कहा गया है काव्य में केवल शब्दों को माध्यम बनाकर साहित्यकार अपनी रचना का सृजन करता है संगीत कला में शब्दों का सहारा भी छोड़कर केवल ध्वनि संयोजन के आधार पर रचना की जाती है। गायन वादन द्वारा उत्पन्न संगीत में केवल आ ..... आ..... द्वारा रागलाप की अभिव्यक्ति में बुद्धि को शब्दों के अर्थों में नहीं उलझना पड़ता वहाँ केवल नाद द्वारा ही भावों की अभिव्यक्ति होती है। अतः जो आनन्द संगीत द्वारा मनुष्य को प्राप्त हो सकता है वह अन्य किसी ललित कला द्वारा सम्भव नहीं। इसीलिए ललित कलाओं में संगीत का स्थान सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। एक गायक या वादक की आत्मा ही स्वरों का रूप धारण करके, कल्पना और वेदना से प्रेरित होकर भाँति–भाँति से जो स्वर योजना करते हैं, वही संगीत है। उस समय आत्मा के आलोक से चमचमाते स्वर, जीवन की सम्पूर्ण वेदना लेकर उत्कृष्ट संगीत को जन्म देते है ऐसे ही संगीत को सुनकर सभी श्रोता उन्मुक्त अवस्था का अनुभव करते हैं।

संगीत में सौन्दर्य बढ़ाने वाले तत्व

संगीत का सम्बन्ध मन मस्तिष्क के संवेगों से माना जाता है, जिससे मानव को सुखानुभूति होती है। संगीत मन्दिरों से जन्मा हुआ, तो उसका लालन पालन भी धर्म के पवित्र परिवेश में हुआ, अतः संगीत शुद्धता पवित्रता को दिये हुए हैं। संगीत के इसी पवित्र शुद्ध स्वरूप में सौन्दर्य का असीमित भण्डार है, जो चार प्रमुख कारकों से और भी संगीत के सौन्दर्य में असीमित वृद्धि करती है।

1. सापेक्षता
2. समता
3. संस्कृति
4. सन्तुलन

1. सापेक्षता

संगीत में सापेक्षता का अर्थ रूप का वह गुणा है जिसमें प्रत्येक, खण्ड से सम्बद्ध और सापेक्ष होता है इस आधार पर जब तक संगीत में एक स्वर दूसरे स्वरों से नियमानुसार सम्बद्ध न हो जो कि 'वर्णो' द्वारा किया

जाता है संगीत की रचना संभव नहीं है। राग में लगने वाले स्वरों का अलपत्व– बहुत्व स्वरों की सापेक्षता का प्राण है। जब संगीत में स्वर अथवा नृत्य में अंगहार स्वयं अपने गुण से आल्हाद उत्पन्न करते है तो रूप में माधुर्य गुण जागृत होता है। माधुर्य का सम्बन्ध मन की सुखानुभूति होते हैं, इन्द्रिय सुख से नहीं। यह गम्भीर आध्यात्मिक होतो है। इस समय समग्र रूपवान पदार्थ का ही आस्वादन किया जाता है।

2. समता

समता भी सौन्दर्य का एक महत्वपूर्ण गुण है जिस प्रकार एक सुन्दर शरीर में प्रत्येक अंग का एक प्रकार की सुडौलता लिए हुए होना आवश्यक है उसी प्रकार संगीत में स्वरों का लगाव न्यास, उपन्यासवादी सम्वादी स्वरों के उचित प्रयोग से राग रूपवान हो सुरूप हो उठता है।

3. संस्कृति

संस्कृति का अर्थ विरोध का अभाव है इसी संस्कृति के कारण 'रूप' ने प्राण डाला जाता है। संस्कृति में राग की शुद्धता ही राग काकू स्थापित करती है। ईष्ट स्वरों के प्रयोग से राम में प्रभाव उत्पन्न किया जाता ह। विवादी स्वरों का प्रयोग इस राग सौन्दर्य को अधिक प्रभावशाली बनाने के उद्देश्य से किया जाता है।

4. संतुलन

रूप को सुन्दर बनाने वाली चौथी विशेषता सन्तुलन है। संगीत में रागालाप, गीत तानों तौड़ो का प्रयोग राग प्रस्तुत करने वाले प्रत्येक अंग का सन्तुलित प्रदर्शन ही 'रूप' को सौन्दर्य प्रदान करने में सहायक होता है। इस प्रकार कलाकार की प्रतिमा स्वयं रूप में सापेक्षता, समता संगति और सन्तुलन के नियमों का निर्माण करती है।

सौन्दर्यात्मक संगीत का मानव जीवन पर अक्षुणय प्रभाव

मानव जीवन में जन्म से मृत्यु तक सम्पूर्ण जीवनकाल में संगीत पूर्ण रूप से आच्छादित रहता है संगीत में प्रारम्भ होकर उसकी जीवन यात्रा संगीत पर ही समाप्त होती है। जहाँ जन्म लेते ही, बधाई के रूप में उसे बधाई गीत सुनाई देते हैं, तो कहीं जच्चा–बच्चा के गीत, ईश्वर को धन्यवाद देते मंगलयान, प्रार्थनायें, ईशवन्दना, श्लोक, इत्यादि संगीत के ही अनेकों सुन्दर रूप है, जो मन मस्तिष्क को पूर्ण प्रभावित करत हैं और सम्पूर्ण आनन्द प्रदान करते हैं।

मानवीय संस्कारों, रीति धर्म, परम्पराओं, इत्यादि में पूर्ण संगीत आच्छादित है। बच्चे के जन्म से आरम्भ होकर उसके सोलह से संस्कारों में संगीत का विशष महत्व होता है। घर में कोई भी मंगल कार्य बिना संगीत के सम्भव नहीं है। मंगल गान भजन, कीर्तन, संकीर्तन, ईशवंदना प्रार्थनाएँ, इत्यादि से आरम्भ होकर ही कोई नवीन कार्य प्रारम्भ किया जाता है। जिस प्रकार मानव की जीवन यात्रा प्रकृति के समक्ष जन्म लेने प्रकृति के विभिन्न स्पन्दनों को सुनने, अनुभवन करने और विभिन्न प्रक्रियाओं से निवृत्त होकर श्मशान की यात्रा में समाप्त हो जाती है। घंटे घड़ियाल और रामनाम सत्य की ध्वनियों के साथ उसका स्थूल शरीर पंचतत्वों से ही बना माना जाता है तथा इन्हीं में विलीन हो जाता है। व्यक्ति की अन्तिम यात्रा में अन्य सभी व्यक्ति सामूहिक रूप से बताते हैं, कि रामनाम ही सत्य है। अन्य सभी असत्य अतः राम (ईश्वर) के स्वरूप को पहचान कर उसके समीप रहना ही श्रेयस्कर व मुक्ति का प्रतीक है। इसीलिए व्यक्ति के मरणोपरान्त सभी व्यक्ति एक स्वर में राम नाम ही सत्य है, गीत सामूहिक रूप से गाते हैं।

अतः मानव के जीवन में संगीत का प्रवेश उसक जन्म के समय नेत्र खोलने के साथ ही रह जाता है और आँखें बन्द होने के बाद भी संगीत की ध्वनि उसे आप्लांवित करती रहती है। संगीत मानव के जीवन का सबसे सुन्दर पक्ष है जो आशा, निराशा के क्षणों में भी केवल मन मस्तिष्क को आनन्द प्रदान करता है और उसके जीवन में अनेकों रंग बिखरेता है।